



DR. DILIP KUMAR SINGH

Dr. Dilip Kumar Singh is a general medical practitioner and progressive farmer. He is President of Swargiya Dr. Yamuna Prasad Singh Sewanidhi.

2. Born on 26th June, 1926, at Barka (Bihar), Dr. Singh did his M.B.B.S. from Patna Medical College in 1952. In 1966, he completed D.T.H&M from School of Tropical Medicine and Hygiene, Liverpool (England). He got elected as Fellow of Royal college of Tropical Medicine and Hygiene, London. He got training in prestigious Hospitals viz: Royal Infirmary Hospital, Liverpool, England; Mount Vernon Hospital, New York, U.S.A. and Peninsula General Hospital, New York, U.S.A. In March, 1965 he was sole Indian delegate to World Asthma Conference held in Eastbourn, England. In April 1966, he attended Golden Jubilee Anniversary of Freedom Struggle of Ireland held in Dublin. In 1966, he visited medical centres and large farm houses far and wide in U.S.A., Canada and Europe to know the latest technologies in hospitals and modern improved Farming.

3. In 1971 on the invitation of the President of the American Academy of General Practice, Dr. Singh visited and studied in various medical centres in U.S.A. In 1973, he was a member of 3 Indian Doctors delegates of World Medical Conference held in Munich, Germany. In 1993 on the invitation of Chairman of International Federation of Ageing, attended the world conference held at Singapore and took part in the discussion of Medical and Social problems faced by the Aged.

4. As there was no electricity, no pucca road and no medical shops in the locality from 1952 to 1966, Dr. Singh had to move around from village to village on horseback along with a man who used to carry all the necessary medicines in a leather bag. In the evening he used to examine and treat patients with the help of kerosene lanterns. He was influenced to start treating Lepers, when he saw a Leper being treated in Gandhi ji's Wardha Aashram. From 1954-74, he located, treated and rehabilitated 382 Lepers. People of Wardha Aashram came to Pirpainti and saw his Leprosy treatment movement and made him a Life Member of National Leprosy Organisation, India (Wardha).

5. Dr. Singh imported 1003 doses of vaccine from Russia and gave it to village children in a single day, when Polio Vaccine was not available in India. In 1968 when he saw several village old men and women Blind for years due to cataract in both eyes, he started free Cataract operation for the poor villagers and tribals, which is continued till today. From 2016 onwards he has started treating hardcore alcoholics. On two occasions he has arranged large camps for awareness and detection of Cancer.

6. Dr. Singh is the recipient of numerous awards and honours which include Kamalabai Hosepet Award in 2006; Sister Carol Huss Award for best community leader in Pirpainti by Bihar Voluntary health service, Patna in 2007; Panchsheel Shiromani Award 2008 for Awakening of health Education among poors and tribals of Pirpainti; Life Time Achievement Award by IMA, Bhagalpur in 2015; IMA Book of Medical Records as, "The First Person in India to Import Polio Vaccine from Russia and distributing it among 1003 poor children"; Lifetime Achievement, Bihar-Excellency Awards-2017; Dainik Jagran Health Care Excellence Samman Award-2018; Healthcare Excellence Award- 9th Annual Conference of S.S.L.C. - Nelcon 2018 A.I.I.M.S., Patna; I.M.A. Life Time Achievement Award on 06.01.2019 by senior Doctors.



डॉ. दिलीप कुमार सिंह

डॉ. दिलीप कुमार सिंह एक जनरल मेडिसिन प्रैक्टिसनर और प्रगतिशील किसान हैं। वह स्वर्गीय डॉ. यमुना प्रसाद सिंह सेवानिधि के अध्यक्ष हैं।

2. डॉ. सिंह का जन्म 26 जून, 1926 को बरका (बिहार) में हुआ। उन्होंने वर्ष 1952 में पटना चिकित्सा महाविद्यालय से एम.बी.बी.एस. किया। उन्होंने वर्ष 1966 में स्कूल ऑफ ट्रॉपिकल मेडिसिन एंड हाईजीन, लिवरपूल (इंग्लैंड) से डी.टी.एच.एंड.एम. किया। उन्हें रॉयल कॉलेज ऑफ ट्रॉपिकल मेडिसिन एंड हाईजीन, लंदन का फेलो चुना गया। उन्होंने रॉयल इंफर्मरी हॉस्पिटल, लिवरपूल, इंग्लैंड; माउंट वॉर्न हॉस्पिटल, न्यूयॉर्क, यूएसए तथा पेनिनसुला जनरल हॉस्पिटल, न्यूयॉर्क, यूएसए जैसे प्रतिष्ठित अस्पतालों में प्रशिक्षण प्राप्त किया। वह मार्च, 1965 में ईस्टबॉर्न, इंग्लैंड में आयोजित विश्व अस्थमा सम्मेलन में एकमात्र भारतीय प्रतिनिधि थे। उन्होंने अप्रैल, 1966 में डबलिन में आयोजित आयरलैंड के स्वतंत्रता संग्राम के स्वर्ण जयंती समारोह में भाग लिया। अस्पतालों में नवीनतम तकनीकों तथा आधुनिक बेहतर कृषि की जानकारी प्राप्त करने के लिए उन्होंने 1966 में यूएसए, कनाडा और यूरोप के चिकित्सा केन्द्रों और बड़े फॉर्म हाउस का दौरा किया।

3. अमेरिकन एकेडमी ऑफ जनरल प्रैक्टिस के अध्यक्ष के आमंत्रण पर, डॉ. सिंह ने 1971 में यूएसए में विभिन्न चिकित्सा केन्द्रों का दौरा किया और उनका अध्ययन किया। वह वर्ष 1973 में म्यूनिख, जर्मनी में आयोजित विश्व चिकित्सा सम्मेलन में 3 भारतीय चिकित्सकों के प्रतिनिधिमंडल के सदस्य थे। इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ एजिंग के अध्यक्ष के आमंत्रण पर, उन्होंने वर्ष 1993 में सिंगापुर में आयोजित विश्व सम्मेलन में भाग लिया और वृद्धों की चिकित्सा और सामाजिक समस्याओं संबंधी चर्चा में भाग लिया।

4. चूंकि वर्ष 1952 से 1966 तक उस क्षेत्र में बिजली, पक्की सड़क और दवा की दुकानें नहीं थी, इसलिए, डॉ. सिंह को घोड़े पर गाँव-गाँव घूमकर इलाज करना पड़ता था, और उनके साथ एक आदमी चलता था जो चमड़े के एक थैले में सभी आवश्यक दवाएं ले जाता था। शाम को वह केरोसिन लालटेन की रोशनी में मरीजों की जांच और इलाज करते थे। गांधी जी के वर्धा आश्रम में एक कोढ़ी का इलाज होते देख प्रभावित होकर, उन्होंने कुष्ठ रोगियों का इलाज शुरू किया। उन्होंने वर्ष 1954-74 तक 382 कुष्ठ रोगियों का पता लगाया, उनका इलाज किया और उनका पुनर्वास किया। वर्धा आश्रम के लोग पीरपैती आए और उनके कुष्ठ उपचार आंदोलन को देखा और उन्हें राष्ट्रीय कुष्ठ संगठन, भारत (वर्धा) का आजीवन सदस्य बनाया।

5. ऐसे समय में जब पोलियो का टीका भारत में उपलब्ध नहीं था, डॉ. सिंह ने रूस से पोलियो वैक्सीन की 1003 डोज का आयात किया और एक ही दिन में ग्रामीण बच्चों का टीकाकरण किया। जब उन्होंने देखा कि गाँवों के कई बुजुर्ग पुरुष और महिलाएं दोनों आँखों में मोतियाबिंद के कारण वर्षों से दृष्टिहीन हैं, तो वर्ष 1968 में उन्होंने निर्धन ग्रामीणों और आदिवासियों के लिए निःशुल्क मोतियाबिंद ऑपरेशन शुरू किया, जो वह आज भी करते हैं। उन्होंने वर्ष 2016 से शराबियों का उपचार शुरू किया है। उन्होंने कैंसर के बारे में जागरूकता लाने और उसकी पहचान करने के लिए दो बड़े शिविरों का आयोजन किया।

6. डॉ. सिंह को कई पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं जिनमें, वर्ष 2006 में 'कमलाबाई होसेपेट पुरस्कार'; वर्ष 2007 में बिहार स्वैच्छिक स्वास्थ्य सेवा, पटना द्वारा पीरपैती में सर्वश्रेष्ठ सामुदायिक नेतृत्व के लिए 'सिस्टर कैरल हंस पुरस्कार'; पीरपैती के गरीबों और आदिवासियों के बीच स्वास्थ्य शिक्षा जागृति के लिए 'पंचशील शिरोमणि पुरस्कार' 2008; वर्ष 2015 में आईएमए, भागलपुर द्वारा लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड; "भारत में रूस से पोलियो वैक्सीन आयात करने वाले और इसे 1003 गरीब बच्चों में वितरित करने वाले पहले व्यक्ति" के रूप में आईएमए बुक ऑफ मेडिकल रिकॉर्ड्स; लाइफटाइम अचीवमेंट, बिहार-एक्सीलेंसी अवार्ड्स-2017; दैनिक जागरण स्वास्थ्य देखभाल उत्कृष्टता सम्मान पुरस्कार-2018; हेल्थकेयर एक्सीलेंस अवार्ड- एस.एस.एल.सी. का 9वां वार्षिक सम्मेलन - नेल्सॉन 2018 एम्स, पटना; वरिष्ठ चिकित्सकों द्वारा दिनांक 06.01.2019 को आई.एम.ए. लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड शामिल हैं।